पद 13: पृथ्वी की बुराई के लिए शैतान नहीं, बल्कि जीवित प्राणियों को दोषी ठहराया गया

- **बासार (Basar) = मांस / शरीर**
- इसका अर्थ **किसी भी जीवित प्राणी** से हो सकता है, जिसमें **जानवर भी सम्मिलित हैं।**
- **आदम** शब्द का सामान्य अर्थ **"मनुष्य" या "मानव जाति"** होता है, परन्तु **यहाँ इस शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है।**
- क्या परमेश्वर ने बुराई की रचना की?
  इब्रानियो विचारधारा के अनुसार **"हाँ"**, परन्तु **उस प्रकार नहीं जैसा हम सामान्यतः समझते हैं।**

भलाई और बुराई के विषय में इब्रानियो दृष्टिकोण

1. मनुष्य को **भलाई और बुराई दोनों प्रकार की प्रवृत्तियों** के साथ बनाया गया है।

2. परमेश्वर ने **भलाई और बुराई दोनों को बनाया।**

ब्रह्मांड कैसे कार्य करता है

- हम अपने ब्रह्मांड के नियमों के अधीन हैं।
- यह संयोग से उत्पन्न नहीं हुआ, परन्तु बुद्धिमानी से रचा गया है।
- दस या ग्यारह आयाम।
- स्ट्रिंग सिद्धांत।
- हमारा ब्रह्मांड चार आयामों से मिलकर बना है।

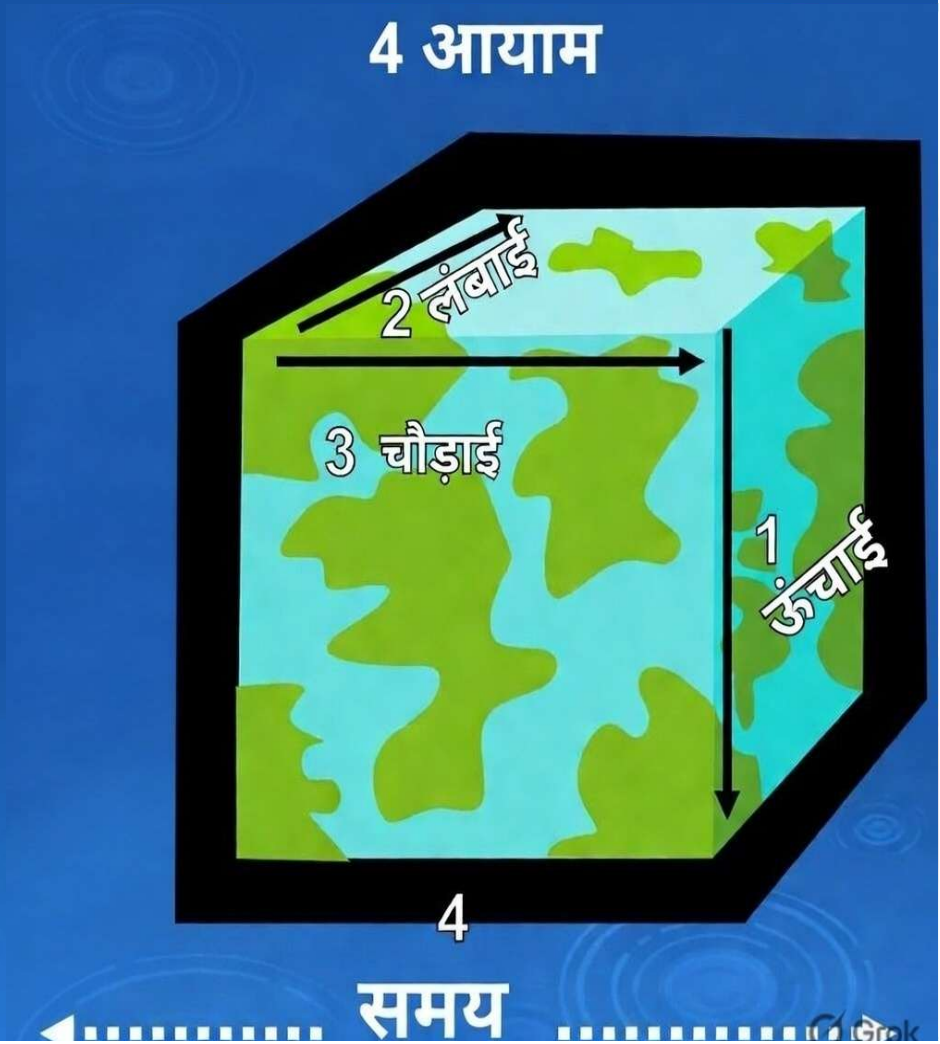

समानांतर ब्रह्मांड

- दूसरे छह या सात आयामों के ब्रह्मांड।
- जो हमारे ब्रह्मांड के साथ ही एक ही समय में अस्तित्व में हैं।
- प्राचीन इब्रानियों के ज्ञानी पुरुषों ने कहा कि बाइबल में परमेश्वर सहित दस आयामों का वर्णन किया गया है।
- स्वर्ग हमारे ब्रह्मांड के बाहर अस्तित्व में है।
- स्वर्ग समय के परे है।
- अनंतकाल का अर्थ यह है कि वहाँ समय का आयाम नहीं होता।

हमारी इंद्रियाँ केवल भौतिक वस्तुओं को ही ग्रहण कर सकती हैं

- समय भौतिक संसार का ही एक भाग है।
- प्रारम्भ में समय को आकाशीय पिंडों की गति के द्वारा मापा जाता था।
- वर्ष – सूर्य के चक्र से निर्धारित होता है।
- माह – चंद्रमा के चक्र से निर्धारित होता है।
- दिन – आकाश में सूर्य की गति से निर्धारित होते हैं।

समय हमारे ब्रह्मांड के क्षय को मापता है

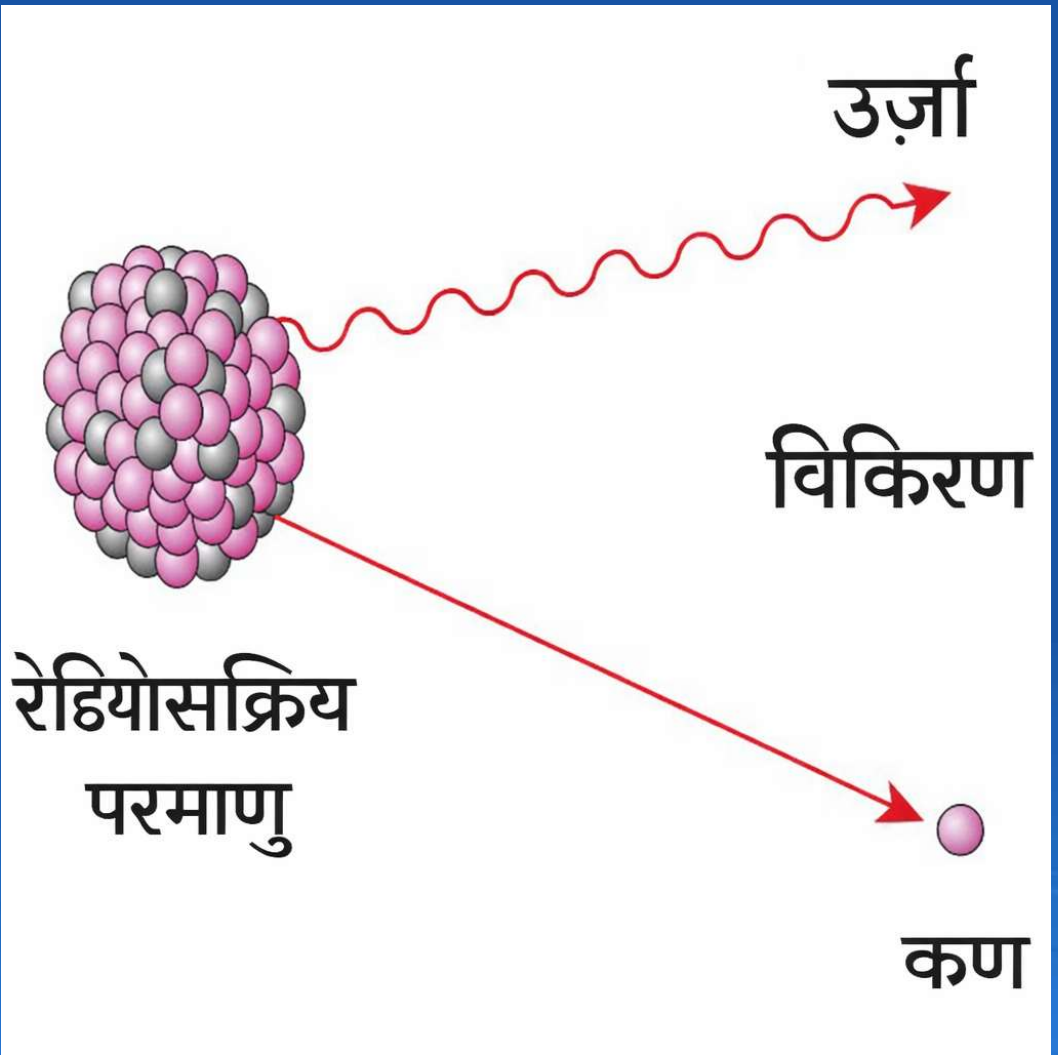

- हमारे ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु पुरानी होती जा रही है।
- यदि क्षय न हो, तो समय भी नहीं होता।
- किसी वस्तु के क्षय होने के लिए उसका भौतिक होना आवश्यक है।

आत्मा: पाँचवाँ आयाम

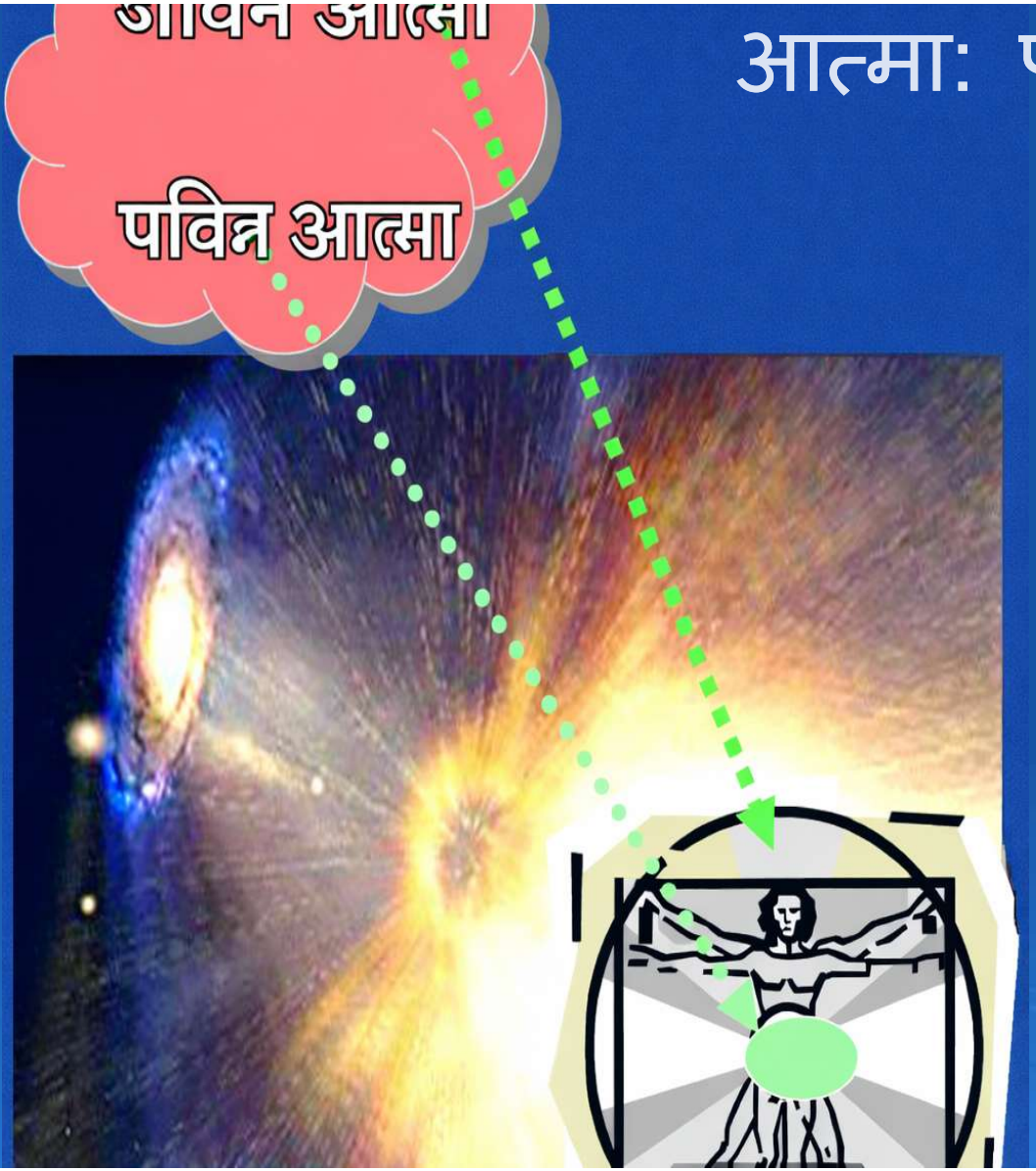

- आत्मा हमारे ब्रह्मांड **में** है।
- आत्मा हमारे ब्रह्मांड **की नहीं** है।
- जीवन आत्मा सभी जीवित प्राणियों में है।
- पवित्र आत्मा केवल मनुष्यों में है।
- आत्मा को हमारी तर्कसंगत इंद्रियों से पहचाना नहीं जा सकता।

प्रारम्भ में ब्रह्मांड अन्धकारमय था

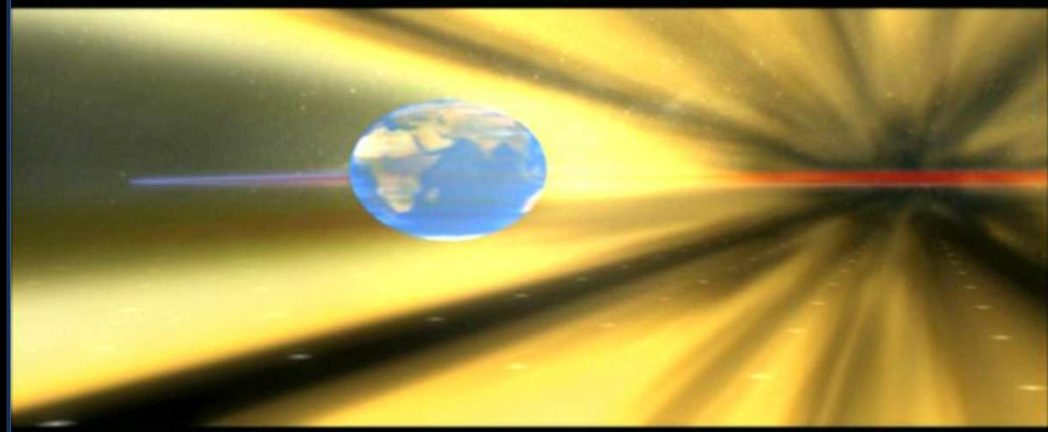

- **उत्पत्ति 1:3 का प्रकाश** = हमारा **आत्मिक प्रकाश**, जो ज्ञान, सत्य और भलाई को प्रकट करता है।
- अन्धकार = “खोशेक”
- अस्पष्टता, असत्य और आत्मिक अन्धापन की आत्मा।

उत्पत्ति 1:1–3
आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
पृथ्वी सुनसान और सूनी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धकार था;
और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डरा रहा था।
तब परमेश्वर ने कहा, “उजियाला हो”; और उजियाला हो गया।

विपरीतताओं का सिद्धांत

1) यह भौतिकी का ईश्वरीय नियम है
2) यदि अच्छाई है तो बुराई भी अवश्य होनी चाहिए!
3) हमारे ब्रह्मांड के बाहर यह सत्य होना आवश्यक नहीं है.
4) स्वर्ग में कोई विपरीत आवश्यका नहीं है

बुराई होने का कारण कौन या क्या है?

- **यशायाह 45:7 (NAS)**-"मैं ज्योति को रचता हूँ और अन्धकार को उत्पन्न करता हूँ; मैं कुशलता (भलाई) देता हूँ और विपत्ति को उत्पन्न करता हूँ; मैं ही यहोवा हूँ, जो ये सब कार्य करता है।"
- **यशायाह 45:7 (JPS)**-"मैं ज्योति को रचता हूँ और अन्धकार को उत्पन्न करता हूँ; मैं शान्ति को बनाता हूँ और विपत्ति को उत्पन्न करता हूँ; मैं यहोवा हूँ, जो ये सब कार्य करता है।"
- **यशायाह 45:7 (KJV)**-"मैं ज्योति को बनाता हूँ और अन्धकार को उत्पन्न करता हूँ; मैं शान्ति देता हूँ और विपत्ति को उत्पन्न करता हूँ; मैं यहोवा हूँ, जो ये सब करता हूँ।"

ज्योति = ओअर

अन्धकार = खोशेक

शान्ति = शालोम

विपत्ति / बुराई = राह

- **"मैं ओअर (ज्योति) को रचता हूँ और खोशेक (अन्धकार) को उत्पन्न करता हूँ; मैं शालोम (शान्ति) देता हूँ और राह (विपत्ति) को उत्पन्न करता हूँ; मैं ही यहोवा (YHWH) हूँ, जो ये सब करता है।"**

- **आमोस 3:6 (JPS)-** "क्या नगर में नरसिंगा फूंका जाए और लोग न डरें? क्या किसी नगर पर विपत्ति (राह) आ पड़े, और यहोवा ने उसे न किया हो?"

- **विलापगीत 3:38 (JPS)-** "क्या परमप्रधान के मुख से विपत्ति (राह) और भलाई दोनों नहीं निकलती?"

- **बुराई इसलिए अस्तित्व में है क्योंकि परमेश्वर ने भलाई की सृष्टि की...और बुराई उसके विपरीत रूप में प्रकट हुई।**

- **मुख्य सिद्धांत: परमेश्वर ने बुराई को वैसे उत्पन्न नहीं किया जैसे उसने भलाई को किया।**

- **बुराई, भलाई की सृष्टि का परिणाम है।**

- प्रकाश को एक कक्ष में जोड़ा जा सकता है|
- अंधकार प्रकाश को कक्ष से हटाता नहीं है|
- यदि प्रकाश उत्पन्न न हो और उपस्थित न हो, तो अंधकार रह जाता है |
- धकार प्रकाश की अनुपस्थिति है |
- बुराई भलाई की अनुपस्थिति है |
- अंधकार "बनाया" नहीं जाता, परंतु प्रकाश "बनाया" जाता है |

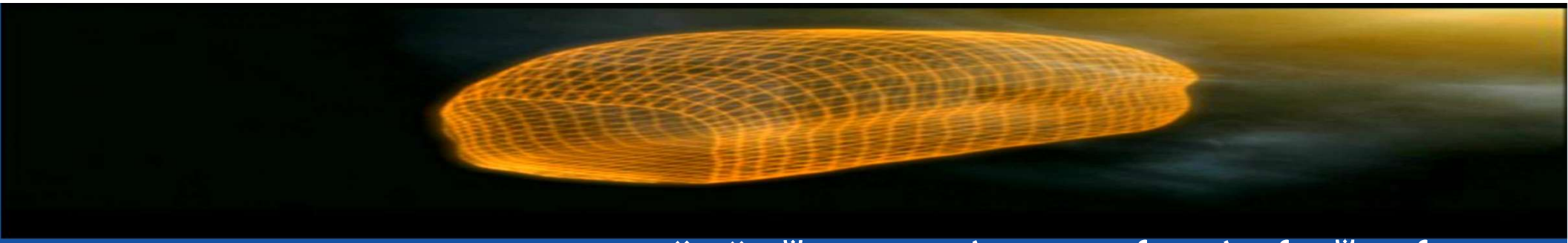

- १) हमारा यह ब्रह्माण्ड चार आयामों में बँधा हुआ है—लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, और समय।
- २) तथापि, सत्य यह है कि चार से अधिक आयाम विद्यमान हैं—सम्भवतः दस अथवा ग्यारह—परन्तु वे हमारे इस ब्रह्माण्ड के ताने-बाने का भाग नहीं हैं।
- ३) आत्मा हमारे इस ब्रह्माण्ड की नहीं है, परन्तु वह मनुष्य के भीतर वास करती है। आत्मा को पाँचवाँ आयाम कहा जा सकता है।
- ४) विरोधियों का सिद्धान्त—यह हमारे ब्रह्माण्ड का एक नियम है। सभी वस्तुएँ अपना विरोधी रखती हैं और उसकी आवश्यकता रखती हैं।
- ५) देखो, बुराई का अस्तित्व इसलिए है क्योंकि भलाई का अस्तित्व है।
- ६) बुराई को सृजित नहीं किया गया, जैसा कि कोई वस्तु बनाई जाती है। परमेश्वर ने केवल भलाई को परिभाषित किया। जो कुछ भी परमेश्वर ने "भलाई" नहीं कहा, वही बुराई है।

इच्छाशक्ति नैतिक चुनावों के लिए है!

- चुनाव संभव हैं क्योंकि विरोधियों का सिद्धान्त हमारे ब्रह्माण्ड में स्थापित है।
- इच्छाशक्ति हमारे आत्मा का कार्य है।
- पसन्द हमारे बुद्धि का कार्य है।
- इच्छाशक्ति मुख्य रूप से नैतिक चुनावों के बारे में है।
- इच्छाशक्ति हमें यह चुनाव देती है: कि हम परमेश्वर से प्रेम करें, या न करें।

इच्छाशक्ति

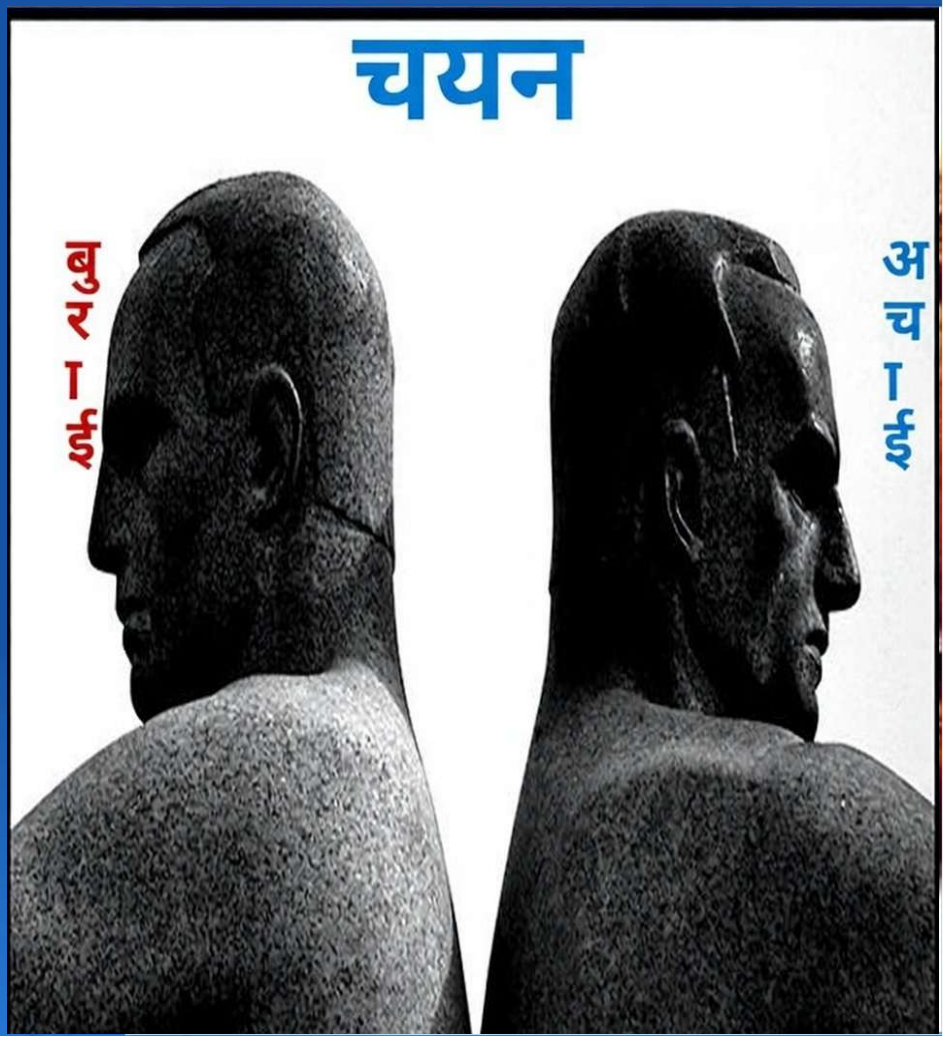

बिना चुनाव के, इच्छाशक्ति की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष ने आदम और हव्वा को चुनाव प्रदान किया

- उद्यान में कुछ भी वर्जित नहीं था
- वे परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ नहीं सकते थे, क्योंकि कोई आज्ञाएँ ही नहीं थीं।
- परन्तु उस वृक्ष के साथ—परमेश्वर ने एक ही नियम दिया, और इसी एक नियम के द्वारा उन्हें एकमात्र अवसर मिला—चुनाव करने का।
- यदि वह वृक्ष न होता, तो उनकी इच्छाशक्ति व्यर्थ हो जाती।
- पाप = आज्ञा-उल्लंघन = बुराई का कार्य
- (रोमियों ४:१५) - "क्योंकि व्यवस्था क्रोध उत्पन्न करती है; परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं, वहाँ उल्लंघन भी नहीं।"

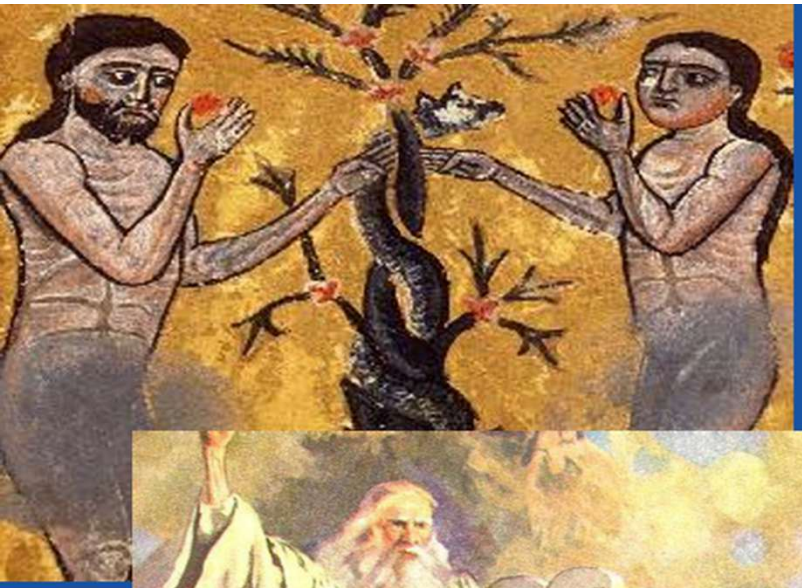

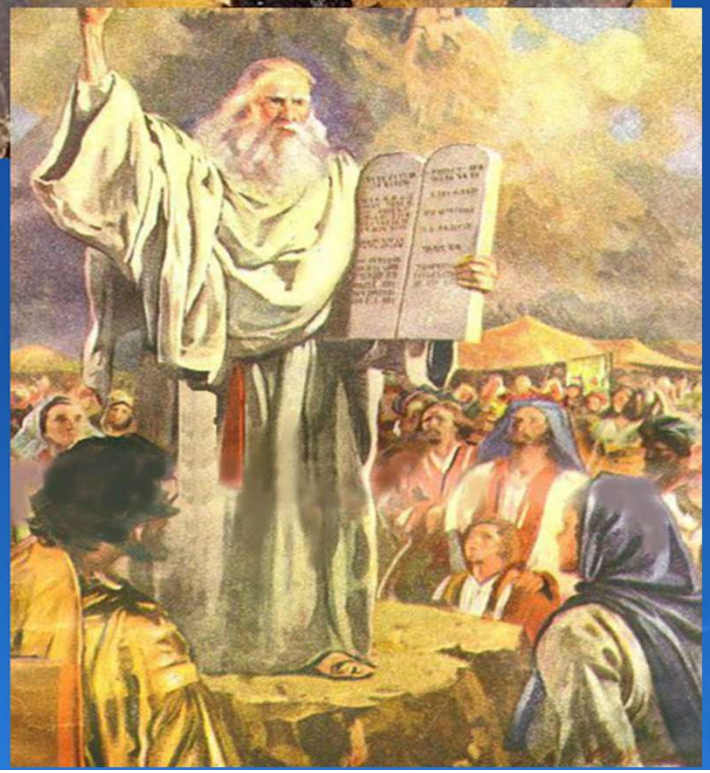

तोरा इस्राएल के लिए वैसी ही है, जैसी अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष आदम और हव्वा के लिए था

- (रोमियों ५:१३) - "क्योंकि व्यवस्था आने तक पाप संसार में था; परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं, वहाँ पाप गिना नहीं जाता।"
- आदम और हव्वा के लिए तोरा केवल एक आज्ञा थी: "उस वृक्ष के फल से मत खाना।"
- मूसा के द्वारा दी गई तोरा में अनेक आज्ञाएँ थीं
- (गलातियों ३:१९)-"तो व्यवस्था का क्या प्रयोजन? वह अपराधों के कारण जोड़ी गई थी, स्वर्गदूतों के द्वारा दी गई, और एक मध्यस्थ के हाथ से; यह तब तक के लिए थी, जब तक वह वंश न आए, जिसके लिए प्रतिज्ञा की गई थी।"
- यदि मनुष्य के पास इच्छाशक्ति है, तो उसे नैतिक चुनाव की आवश्यकता है।

शैतान

- यह महत्वपूर्ण है कि हम शैतान की युक्तियों और उसकी चालों को जानें।
- १) शैतान आरम्भ में एक स्वर्गीय प्राणी था।

दूत = **मलाक (malach)**

स्वर्गीय प्राणियों के अनेक प्रकार होते हैं।

सेराफिम और करूबिम दूत नहीं हैं।

वे सर्वोच्च पद और श्रेणी के हैं।

यहेजकेल २८:१२–१४

यहेजकेल २८:१२–१४
“तू अभिषिक्त करूब था जो आच्छादन करता था;
और मैंने तुझे वहाँ स्थापित किया था।
तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर था;
और तू आग के पत्थरों के बीच चलता फिरता था।”

- **२) शैतान और उसके दूतों ने परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध किया**
- **प्रकाशितवाक्य १२:७–९** -"और स्वर्ग में युद्ध हुआ... और वह बड़ा अजगर नीचे गिरा दिया गया... वह पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत भी उसके साथ नीचे गिरा दिए गए..."
  - शैतान और उसके दूत **जीतने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली नहीं थे।**
  - शैतान **मीकाएल जितना शक्तिशाली नहीं था**, इसलिए उसे पृथ्वी पर भेज दिया गया।
  - हमें **शैतान की शक्ति का अधिक अनुमान (बढ़ा-चढ़ाकर) नहीं लगाना चाहिए।**

३) शैतान एक छल करने वाला है।

- वह परमेश्वर के नियंत्रण के अधीन है।
- परमेश्वर की योजना में यह भी है कि शैतान लोगों को **भरमाए और परीक्षा में डाले।**
- बुराई का उद्देश्य यह है कि मनुष्यों को **नैतिक चुनाव (सही और गलत के बीच चुनने का अवसर)** दिया जाए।

४) शैतान एक अपवित्र आत्मा है।

- हमारे ब्रह्मांड में हर एक वस्तु का **एक विपरीत पक्ष** होता है।
- यदि **पवित्र आत्मा** है, तो **अपवित्र आत्मा** भी होती है।
- शैतान **"परमेश्वर के विरोधी" (anti-God)** के समान है।

- **“शैतान” एक पदवी (TITLE) है, नाम नहीं।**
- **“शैतान” इब्रानी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है “विरोधी” (adversary)।**
- हम अपने बुरे विचारों के लिए शैतान को दोष नहीं दे सकते, क्योंकि **शैतान हमारे विचारों को नियंत्रित नहीं करता।**
- हम अपनी **इच्छा (WILL)** के द्वारा बुराई या भलाई को **चुनते हैं।**
- **हज़ार वर्षीय राज्य (Millennial Kingdom)** यह सिद्ध करता है कि बुराई की प्रवृत्ति मनुष्य के भीतर ही है।
- शैतान को बाँध दिया जाएगा।
- **१००० वर्षों** के अंत में वह फिर से लोगों को बुराई चुनने का अवसर देगा, और बहुत से लोग मसीह के विरुद्ध विद्रोह में उसके पीछे हो लेंगे।
- **नूह और उसके ३ पुत्रों** ने परमेश्वर का अनुसरण करने का चुनाव किया।
- **नूह का जहाज़ (Ark)** सुरक्षित शरण का एक “प्रतिरूप” (type) है।
- **मसीह ही अब एकमात्र सच्चा “जहाज़ (Ark)” हैं।**